234 P
813
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1330/10/71

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं० Acc. No. 813

20/11

891.431
V59S

ॐ

वन्देमातरम्

स्वराज्य की बंशी

लेखक—

ठा० ज्ञानसिंह वर्मा हरीपुर निवासी।

पब्लिशर—सीताराम बुकसेलर अलीगढ़ सिटी।

प्रथम बार ४०००	सन् १९२२ ई०	मूल्य -)

प्रिंटर—पं० जगदीशप्रसाद शर्मा "जगदीश प्रेस" अलीगढ़।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 813
Date 22.12.71
GOVT. OF INDIA

* ओ३म् *

बन्देमातरम्

स्वराज्य की बंशी

ईश्वर प्रार्थना

भजन नं० १

टेक–दया हो दीनबन्धु भगवान ।

नाथ कृपा तुम्हारी बिन हमने पाये कष्ट महान् ।
धर्म गया धन गया हमारा गया मान सन्मान ॥ दया० ॥
सब कुछ दिया गंवाय हमारे कुछ भी पास रहा न ।
केवल तुव आश्रय पर जीवित है भारत सन्तान ॥ दया० ॥
हमरे दुष्कर्मों का फल क्या अब तक भी निबटान ।
जो अब तक खा रहे ठोकरें सहते हैं अपमान ॥ दया० ॥
पाते पाते क्लेश हमारे निकसे चाहें प्रान ।
अब तो कृपादृष्टि से हेरो करे विनय "अज्ञान" ॥ दया० ॥

ग़ज़ल नं० २

जगदीश न्याय कारी विनती सुनो हमारी।
संकट समय में स्वामी लीनी शरण तिहारी॥
हे दीनबन्धु भगवन्! टुक ध्यान इधर दीजै।
कैसी विपत पड़ी है भारत जनों पै भारी॥
अन्याय की घटाएं चहुं ओर छा रही हैं।
अन्धेर को मिटाओ हे न्याय दण्ड धारी॥
दुष्टों के दुर्दमन की दामिन दमक रही है।
रक्षा करो जनों की हे तीन ताप हारी॥
जिस देश को था सौंपा सृष्टि का भरण पोषण।
हा! आज उसके वासी दर २ के हैं भिखारी॥
संसार का मुकुट था जिसको स्वयं बनाया।
पैदा किये थे जिसमें भीषम से ब्रह्मचारी॥
पर पददलित हुए हैं उस देश के निवासी।
जिसमें कभी हुए थे अर्जुन से बाणधारी॥
पापों का फल हमारा नहीं दोष है किसी का।
निज पांव में कुठारी अपने ही हाथ मारी॥
"अज्ञान" की विनय है हे दीनबन्धु भगवन्।
रक्षा करो जनों की करुणा सदन मुरारी॥

भारत पुकार

ग़ज़ल नं० ३

क्यों दीनबन्धु मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं॥
आश्रित तेरा नहीं हूं कि तेरी प्रजा नहीं।
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं॥
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं।
माना कि मेरे पाप बहुत हैं बढ़े प्रभू॥

कुछ उनसे न्यून तर तो तुम्हारी दया नहीं।
करुणा करोगे आप क्या खूं मेरा देख कर ॥
दुख तो मेरा हे नाथ ! कुछ तुम से छिपा नहीं।
जानेगा कोई क्या कि है दीनों का तुझ को पक्ष ॥
दुष्टों का सर्व नाश जो तू ने किया नहीं।
क्यों मुझ को दुःख देते हैं लेते हैं बद दुआ ॥
लोगों का मैंने कुछ भी लिया और दिया नहीं।
सब जानते हैं आप और कल कीसी है यह बात ॥
अहसान उनके साथ में क्या क्या किया नहीं।
तोते की तरह आंखें बदलते हैं आज वह ॥
अन्याय भी उनसे कोई बाक़ी रहा नहीं।
तुम भी शरण न दोगे तो जाऊंगा मैं कहां ॥
अच्छा हूं या बुरा हूं किसी और का नहीं।

फूट से हानि

ग़ज़ल नं० ४

कहो आपस के झगड़े में नफ़ा क्या तुमने पाई है।
बना बैठा है दुश्मन आज कल भाई का भाई है ॥
किये बरबाद लाखों घर अदालत झूठी लड़ २ कर।
नहीं फिर भी ख़याल आया हुई बिलकुल सफ़ाई है ॥
बड़े गाढ़े पसीने की कमाई बाप दादों की।
बहाई मिस्ल पानी मुफ्त ख़ोरों को खिलाई है ॥
लुटा कर मालो ज़र अपना हुए कंगाल बैठे हो।
खुद अपनी बेवकूफ़ी से कराई जग हंसाई है ॥
नहीं है घर में खाने को न तन ढकने को कपड़ा है।
ये हालत है हुतफ़ों गांठ में नहीं एक पाई है ॥

ये है इन्साफ़ या बन्दर का हिस्सा ग़ौर कर देखो।
करी उल्टे छुरे से दोनों के सिर की सफ़ाई है॥
न जाना भूल कर मित्रों कभी ऐसी अदालत में।
जहां इन्साफ़ बिकता न्याय की क़ीमत लगाई है॥
कहे "अज्ञान" अब तो छोड़ दो पीछा अदालत का।
इसी ने देश में परदेशियों की जड़ जमाई है॥

प्रभाती ५

जागो जागो हे भारत दुलारे, उठ के बैठो बहुत सोये प्यारे।
स्वराज सूरज के चमके किनारे। छिप रहे हैं गुलामी के तारे॥
स्वं सेवक भी पक्षी पुकारे। जागो २ हे० ॥
हिन्दु हो या मुसल्मां ईसाई। पारसी हो या सिख जैन भाई॥
एक माता के हैं पुत्र सारे। जागो २ हे॥
बुड्ढे हों या जवां हों या बच्चे। देश सेवा में साबित हों सच्चे॥
जल्द मंज़िल लगे आ किनारे। जागो २ हे० ॥
दास लाला अली दो बिरादर। किचलू आज़ाद मोती जवाहर।
कृष्ण की जन्म भूमी सिधारे। जागो २ हे० ॥

मेल करना सीखलो

ग़ज़ल नं० ६

दूध पानी की तरह आपस में मिलना सीखलो।
दूर करके दुरदुराना मेल करना सीखलो॥
दूध में पानी मिले तो भेद कुछ रखता नहीं।
देके अपना रंग छाती से लगाना सीखलो॥
दूध बिकता जिस तरह उस भाव ही पानी बिके।
देकर के हक़ बराबरी ताक़त बढ़ाना सीखलो॥
जब कि हलवाई के हाथों आग पर चढ़ते हैं वह।
वक्त पर खुद को जला बदला चुकाना सीखलो॥

देख कर पानी जला आपे में नहीं रहता है दूध।
मित्र के बिछुरन पै जी का होम करना सीखलो॥
देखा हलवाई ने उबला डाल चुल्लू जल दिया।
मित्र मिलने पर पुनः रो रो के मिलना सीखलो॥
नीचों को ऊंचा चढ़ा अपनी बराबर कीजिये।
छोड़ कर "अज्ञान" अब तो प्रेम करना सीखलो॥

रसिया नं० ७

टेक-चरखा चले रात दिन घर २ तब हो भारत का उद्धार।
जब से चरखा चला घरों की मिटी सकल तकरार॥
कुछ कुछ होगया बन्द तभी से फूट कलह का द्वार।
चरखा चले० ॥ १ ॥
कहा करे बन्दूक तोप अरु कहा करे तलवार।
इसने सब कर दिये निकम्मे दुश्मन के हथियार॥
चरखा चले० ॥ २ ॥
मानचेस्टर के इसने ही पट्ट किये बाज़ार।
लंकाशायर के कोरिन के मान दिये हैं मार॥
चरखा चले० ॥ ३ ॥
पड़े सुनाई जो घर घर से चरखे की हुंकार।
तो फिर जल्द दीन भारत का बेड़ा होजाय पार॥
चरखा चले० ॥ ४ ॥

रसिया नं० ८

टेक-कातो सब मिल भारत वासी चरखा पार लगावेगा।
जिस दम झीनी और सुरीली तान सुनावेगा॥
एक होंय भारतवासी यह पाठ पढ़ावेगा।
कातो सब मिल० ॥ १ ॥

नौकरशाही के पकड़ २ कर कान हिलावेगा।
बराबरी का हक़ उन्हीं से हमें दिलावेगा॥
काती सब मिल० ॥ २ ॥
मानचेस्टर और लेवरपूल के मान घटावेगा।
खुद ग़र्ज़ी का मज़ा उन्हें ये खूब चखावेगा॥
काती सब मिल० ॥ ३ ॥
भारत की प्राचीन सभ्यता वापिस लावेगा।
दुष्टों के पंजे से यही आज़ाद करावेगा॥
काती सब मिल० ॥ ४ ॥

ग़ज़ल नं० ९

होगये तैयार अब कुछ कर दिखाने के लिये।
अब न फुर्सत है हमें बातें बनाने के लिये॥
कर चुके हैं हम प्रतिज्ञा देश के उद्धार की।
बांधे बैठे हैं कमर हम जेल जाने के लिये॥
हथकड़ी बेड़ी हैं गहना वीरता का दोस्तो।
हम सदा तैयार हैं तन पर सजाने के लिये॥
थे हुए पैदा हमारे पूर्वज जिसमें कभी।
जाते हैं उस जेल का कौना बसाने के लिये॥
देश के नेताओं ने रह कर किया जिसको है पाक।
फिर न कोई सबब पग पीछे हटाने के लिये॥
मुहम्मद शौकत अली गांधी की तकलीफों को सुन।
आता है घर हमको अब तो काट खाने के लिये॥
देश के हित वे मरें हम घर में तोड़ें रोटियां।
लानत हमें सौ बार ऐसा खाना खाने के लिये॥
हैं वे अब नामर्द हिजड़े जेल से डरते हैं जो।
व्यर्थ जीते हैं जगत में मुंह दिखाने के लिये॥

हैं बड़े बेशर्म जो खाते हैं टुकड़े हिन्द के।
ग़ैरों के तलवों को चाटें पदवी पाने के लिये॥
रायसाहिब खां बहादुर बन दिखाते है अकड़।
भाइयों की अपने गर्दन के फंसाने के लिये॥
है मज़ा तिस पर न पूछें उनको कुत्ते की तरह।
तो भी जाते हैं घुसे फटकार खाने के लिये॥
देश वासिन को दे ताक़त हे मेरे जगदीश अब।
एक दम तैयार हों सब सर कटाने के लिये॥
हाथ में हों हथकड़ी बेड़ी हो पग "अज्ञान" के।
देश हित का गान मुख तबला बजाने के लिये॥

भजन नं० १०

टेक–हमारी अब सुध लो करतार बढ़े दिन दूना अत्याचार।
न्याय पक्ष को छोड़ दुष्ट जन करते हैं अन्याय॥
भूलि गये अस्तित्व तुम्हारा कीजे जल्द उपाय।
लगी अब खान खेत को बार॥ हमारी अब०॥ १॥
जब जब हानि धर्म की होवे बढ़े धरा पर पाप।
तब तब करन धर्म की रक्षा जन्म लेत हैं आप॥
किया गीता में प्रकट विचार॥ हमारी अब०॥ २॥
गौ माता पर चले कटारी इसका करो खयाल।
तेतीस कोटि दुःख से व्याकुल प हो दीन दयाल॥
नहीं कष्टों का वारा पार॥ हमारी अब०॥ ३॥
शीत घाम अरु वर्षा ऋतु में सहते कष्ट महान्।
नंगे बदन पेट से भूखे तो भी हाय! किसान।
बढ़े तिस पर कर बे शुम्मार॥ हमारी अब०॥ ४॥

दादरा नं० ११

टेक–मैं तो कातूंगी चरखा बुनादो टुकरी।
कपड़ा विदेशी न पहनूंगी हरगिज़॥

इसने तो इज्जत की किरकिरी ॥ मैं तो० ॥१॥
गर्मी व जाड़ा भी इसमें रुके ना।
क्यों फिर मैं पहनूं ग़रज़ क्या परी ॥ मैं तो० ॥२॥
पहनों तो इसमें बदन सारा चमके।
जाती हूं मैं तो शरम से मरी ॥ मैं तो० ॥ ३॥
जब से सुना इस में चर्बी लगाति है।
तब से प्रतिज्ञा है मैंने करी ॥ मैं तो० ॥४॥

ग़ज़ल नं० १२

हमारे देश में मित्रो हुए हैं शेर बर पैदा।
जगा है भाग्य भारत का हुए ऐसे बशर पैदा॥
दास लाला अली भाई व नहरूकी बदौलत अब।
हुआ उम्मीदका अपने फलाफूला शजर पैदा॥
मार कर निज सुखोंको लात बैठे जेलखानों में।
पलट करके ज़मानेको नया कीया दहर पैदा॥
बंधीहै धाक चहुंदिशि इससमय भारतके वीरोंकी।
दहलताहै कलेजा होता दिल दुश्मनके डर पैदा॥
यही है आरज़ू "अज्ञान" की हे दीन हितकारी।
करो गांधी सरीखे वीर अब हरएक के घर पैदा॥

भजन नं० १३

टेक—जगो हे भारत के सरताज।
नींद तुम्हारी में हे वीरों बिगड़ गया सब काज।
घात लगी चोरों की कर रहे तुम्हर घर म राज ॥ जगो०
पात पात कर लूट ले गये दुश्मन धोखे बाज।
जगा जगा हारे नहिं तुमको अब तक आई लाज ॥ जगो०
थे श्रृगाल वनसिंह रहे हैं शिर तुम्हरे पर गाज।
सिंह केहरी होकर कैसे गीदड़ बन रहे आज ॥ जागो०

छोड़ मित्र "अज्ञान" सजो अब सत्याग्रह के साज।
सब मिल गैल गहो गांधीकी लेलो राज स्वराज ॥ जगो०

रसिया नं० १४

टेक-करके परदेशिन सों प्रीति आज ये भारत पछितानो।
बल विद्या धन गयो रह्योना कोई मरदानों।
तब गउअनकी गरदनपै आरो दुष्टन धरि तानो॥
कर के परदेशिन० ॥ १ ॥
चलाइ पेचको पेच छीन लियो सब तानो बानो।
लेगयो खेंचि विलायत कूं रेली दानो दानो॥
कर के परदेशिन० ॥ २ ॥
हम ने करी सहाय युद्ध जब जर्मन ते ठानो।
रौलट बिल है जाइगो जारी ये नाओ जानो॥
कर के परदेशिन० ॥ ३ ॥
अमृतसर में खून बहायो निर्भय मन मानो।
ओडायर जल्लाद तनक नाओ मनमें घबरानो॥
कर के परदेशिन० ॥ ४ ॥

** असहयोग नरसिंहा १५ **

टेक-बजाएँ जइयो भारत में मन असहयोग नर सिंहा।
सुमति सरंगी बजे रात दिन ठुके मेल मृदंगा॥
राग स्वराज अलापि रहे मन सुनि२ उठति उमंगा
बजाएँ जइयो० ॥ १ ॥
निर्मल काया होय तुम्हारी न्हाउ ज्ञानकी गंगा।
पूजो देश भगवती को नहिं पड़े भजन में भंगा॥
बजाएँ जइयो० ॥ २ ॥
बनो मेम्बर कांग्रेस के कर लेवो सतसंगा
नवधा भक्ति करौ नवगुण ले भारतके नौरंगा॥
बजाएँ जइयो० ॥ ३ ॥

सेवा करो शांती से मति बोलो बचन अभंगा ।
भारत पै नौछावर है जाउ ज्यों जर मरै पतंगा ॥
बजायें जइयो० ॥ ४ ॥
हम जायें खुशीसे जेल करो मति कोई दंगमदंगा ।
जिसदिन होय स्वराज आपनो करिलीजो मनचंगा ।
बजायें जइयो० ॥ ५ ॥
निर्भय वर्मा दास तुम्हारो रोकौ तनक तरंगा ॥
बृटिश राज घबराइ रह्यो लखि असहयोग को ढंगा ।
बजायें जइयो० ॥ ६ ॥

मलहार नं० १६

टेक–गड़ेरी विचित्र हिंडोलना, झूलें सब नर नार ।
असहयोग झूला पड़े, मेल वृक्ष की डार ॥
गड़ेरी विचित्र हिंडोलना० ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति कलियां खिलीं, फूल रही फुलवार ।
गड़ेरी विचित्र हिंडोलना० ॥ २ ॥
उठी महक स्वाधीनता, बहति एकता की ब्यार ॥
गड़ेरी विचित्र हिंडोलना० ॥ ३ ॥
समता रस बरसन लग्यो, नन्हीं २ पड़ति फुहार ।
गड़ेरी विचित्र हिंडोलना० ॥ ४ ॥
कर्म वीर झोटा लै रहे, कायर हटे हैं पिछार ॥
गड़ेरी बिचित्र हिंडोलना० ॥ ५ ॥
भयौ ज्ञान "अज्ञान" कूं, आरही अजब बहार ।
गड़ेरी विचित्र हिंडोलना० ॥ ६ ॥

दादरा नं० १७

टेक–देखो बाजी मुरलिया मोहन की ।
क्या खूब गांधी ने बजाई है बांसुरी ॥

सुनतेही फ़िदा होगया जिसके मनकी परी।
लगा करने निछावर वो तन मन की ॥ देखो० ॥ १ ॥
इस बांसरी विचित्र की छा घोर सी गई।
भारत के कौने कौने में घर २ खबर भई।
बजी बंसी अनौखी नई धुन की ॥ देखो० ॥ २ ॥
सुनते ही घोर देश की हालत सुधर गई।
अपने दिलों की भीरुता जाने किधर गई ॥
दहलाई जिस से छाती है दुश्मन की ॥ देखो० ॥३॥
इस बांसरी ने देखो तो कैसा किया कमाल।
बिछुड़ोंको मिला मुर्दोंमें दी जान इसने डाल।
"अज्ञान" से न हो सके तारीफ़ गुन की ॥ देखो० ॥४॥

ग़ज़ल नं० १८

उठो हे भारत के वीर जागो।
ज़माना रंगत बदल रहा है ॥
मिटी अविद्या की रात देखो,
वो ज्ञान दिनकर निकल रहा है ॥ १ ॥
तुम्हारी ग़फ़लत में चोर डाकू,
तुम्हारे घर में जो आ घुसे थे।
सुबह की लाली को देख अबतो,
कलेजा उनका दहल रहा है ॥ २ ॥
तुम्हारे साथी जो उठ चुके हैं,
रहे हैं चीजें संभाल अपनी।
लुटे हुए घर को देख उनकी,
रगों में लोहू उबल रहा है ॥ ३ ॥
हुए मुक़ाबिल पै रहज़नों को,
ले कर में तलवार शांती की।

तुम्हारी रक्षा को आये मोहन,
चक्र सुदर्शन भी चल रहा है॥ ४॥
मचा है घनघोर युद्ध लेकिन,
तुम्हारे कानों पै जूं न रेंगी।
मरोगे गीदड़ की मौत क्योंकर,
कि सर पै दुश्मन उछल रहा है॥ ५॥
मिला है सदियों के बाद मौक़ा,
मिटी है "अज्ञान" की खुमारी।
निकल जहालत से देश भारत,
नवीन सांचे में ढल रहा है॥ ६॥

ग़ज़ल नं० १९

मादरे हिन्द का ऋण तुमको चुकाना होगा।
दर्दो ग़म रंजों अलम सरपै उठाना होगा॥
भूख और प्यास कड़ी धूप में पैदल चल कर।
हर शहर, क़स्बा, गली कूचा जगाना होगा॥
बेड़ियां पांव में और तौक़ गले में होगा।
हुब्बे वतनी में तुम्हें सरभी कटाना होगा॥
गोलियां सीने में और बम भी गिरेंगे सर पर।
खाकिये जिस्म तहे खाक मिलाना होगा॥
तीरो तलवार मशीगन भी चलेंगे तुम पर।
आप का सीना सितमगर का निशाना होगा॥
यूं तो कहने को सभी मुंह से कहा करते हैं।
अमली जीवन मगर अब "गंग" बनाना होगा॥

ग़ज़ल नं० २०

वतन के वास्ते बस जान घुलादेंगे हम।
गले को शान से फांसी पै झुलादेंगे हम॥

भीष्म-सन्तान हैं कुत्तों की मेरंगे क्या मौत।
जिस्म को शौक़ से बाणों पै सुलादेंगे हम॥
रंज झेलेंगे मुसीबत भी सहेंगे लेकिन।
गले से तौक़ ग़ुलामी का खुलादेंगे हम॥
ख़ात्मा ज़ुल्मों का करदेंगे यह बीड़ा है लिया।
न्याय और सत्य के बस फूल फुलादेंगे हम॥
नौकरो! और सतालो कि बस अरमां न रहे।
चौकड़ी सारी किसी रोज़ भुलादेंगे हम॥
तुम तो इन्सान हो इन्सान की हस्ती क्या है।
'इन्द्र' भगवानका आसन भी हिलादेंगेहम॥

ग़ज़ल नं० २१।

दौलते हिन्द अभी बे शुमार बाकी है।
हम ग़रीबों का अगर पेतवार बाकी है॥
उतर चुका है गुलामी का नशा ऐ साक़ी।
मगर हां चश्मों में कुछ कुछ खुमार बाकी है॥
खूनी डायर को नहीं जब तलक सज़ा मिलती।
हिन्द वालों के दिलों में बुख़ार बाक़ी है॥
मालोज़र इज़्ज़तो अस्मत सभी गंवा बैठे।
अब तो जाने को फ़क़त जाने ज़ार बाक़ी है॥
चाल बाज़ी से तेरी होगई दुनिया वाक़िफ़।
अबतो देने को फ़क़त इश्तहार बाक़ी है॥
निशाने ज़ुल्म मिटाने, को हैं "सर्यू" तैयार।
खुदा के हुक्म का बस इन्तज़ार बाक़ी है॥
(वर्तमान से)

वीर प्रतिज्ञा ।

रसिया नं० २२ ।

टेक-पीछे नहीं क़दम धरेंगे, डट २ संग्राम करेंगे ।
दुश्मन जब लेकर मशीनगन रण भूमी में आवेंगे ।
हम भी लेकर चक्र सुदर्शन को सन्मुख डट जावेंगे ॥
अगर उड़ चढ़ कर विमान पर बम्ब वृष्टि बरसावेंगे ।
सूत के गोले बना बना लन्दन बिस्मार करेंगे ॥
डट २ संग्राम० ॥ १ ॥
सत्याग्रह की सांग गाढ़ दुश्मन का गर्व घटाना है ।
शान्त शस्त्र ले समर बीच भारी संग्राम मचाना है ॥
अस्त्र अहिंसा को धारण कर जय का नाद बजाना है ।
लेकर छोड़ेंगे स्वराज्य मरने से नहीं डरेंगे ॥
डट २ संग्राम० ॥ २ ॥
जूझ गये यदि रण स्थल में सीधे स्वर्ग सिधायेंगे ।
विजय मिली तो भारत में मन माने ऐश उड़ायेंगे ॥
दोनों विधि आनन्द मिले फिर किस प्रकार घबरायेंगे ।
होकर भारत वीर वचन अपने से नहीं टरेंगे ॥
डट २ संग्राम० ॥ ३ ॥
सन्तान भीम अर्जुन की हैं उनका ही खून बदन में है ।
अपमान सहेंगे कभी नहीं जब तलक प्राण इस तन में है ॥
पंजाब का बदला लेवेंगे बस यही लगन एक मन में है ।
पूरन वर्मा कभी कौल अपने से नहीं फिरेंगे ॥
डट २ संग्राम ॥ ४ ॥

॥ स्वराज्य की बंशी समाप्त ॥

पता—सीताराम बुकसेलर अलीगढ़ सिटी ।

ख़ज़ाना रोज़गार।

इस पुस्तक में महा सुगन्धित तैल, लैवेन्डर, ताम्बूल विहार बनारस की सी तम्बाकू की गोली अंजन, मंजन खिज़ाब बाल उड़ाने का साबुन बाल उमर भर न जमने की दवा गोरे खूब सूरत होने की दवा, अर्क कपूर कस्तूरी सौ रोगों की एक दवा पारे का कटोरा गंधक का गिलास, आगरे का दाल का मसाला कपूर की माला, मेस्मरेजिम की अंगूठी, बटन दियासलाई फोटूग्राफी घड़ी साज़ी, गिलट साज़ी, तार का काम साबुन, रबर की मुहर का बनाना सोडावाटर काग़ज़ पेंसिल ब्लूबिलेक स्याही सिगरेट सुई, आलपीन निब इत्यादि अनेक चीजें बनाने की विधी लिखी है जिन्हें सीखकर खूब धन पैदा कीजिये मूल्य १) डा०।≈)

☞ हारमोनियम टीचर ☜

(बिना उस्ताद के बाजा सिखाने वाली पुस्तक)

इस पुस्तक में हारमोनियम बाजे पर गाने की ग़ज़ल, कव्वाली, भजन, दादरा आदि ऐसी सुगम रीति से बतलाई गई है कि ३ महीने में बखूबी बाजा बजाना आजाता है मूल्य।≈) डांक खर्च।-)

दी हिन्दी इंगलिश टीचर

(बिना उस्ताद के थोड़े समय में अंगरेज़ी सिखानेवाली पुस्तक)

इस अकेली को पढ़कर अंग्रेजी बोलना, चिट्ठी पत्री लिखना यह सब सीखलो, इसमें सब प्रकार के कई हजार महावरों के शब्द और सब महकमों की बोल चाल के फिकरे अर्थ के भेद ऐसी सुगम रीति से समझाये हैं कि छः महीने में मिडिल पास की लियाकत हो जाय मंगा कर देखो, दूसरी पुस्तकों से मुका-बिला करलो अगर सबसे अच्छी हो तो रक्खो नहीं तो वापिस कर के दाम मंगालो यह शर्त है मूल्य १) उर्दू का १) डाक खर्च।≈)

सचित्र कोकशास्त्र

लीजिये रसिक महाशयों ! यह वही गुप्त ग्रन्थ है । जिसकी खोज में आप बहुत समय से थे एक सज्जन ने इसको अत्यन्त परिश्रम और धन व्यय करके छपवाया है इस में स्त्री पुरुषों के भेद लक्षण, सहवास और गर्भाधान के नियम, रक्षा और पहचान, मन चाही सन्तान उत्पन्न करने की रीति स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों की औषधि, चिकित्सा और निदान इत्यादि अनेक परम उपयोगी विषयों सहित जो लिखने में नहीं आ सकतीं मूल्य १) उर्दू १) डांक खर्च ।≈)

कानून दर्पण ।

इस में ताजीरात हिंद, ज़ाब्ता दीवानी, फौज़दारी, मुहाइदा वग़ैरा २ पचपन कानूनों का सार लिखा है मूल्य १) डांक ।≈)

हमारे यहां की छपी हुई अन्य नई पुस्तकें:—

कैलाश पति तन्त्र	॥)	घर का वकील	२)
सिद्ध करामात	१।)	इन्द्रजाल बड़ा	१॥)
हिन्दी उर्दू शिक्षक	॥)	चैतन्य कला	।)
तेजी मंदी	॥)	टेली ग्राफ टीचर	॥)
मोहनी मंत्र	॥)	कार्रवाई फौजदारी	१।)
हिंदी इंगलिश छंदावली	॥)	कार्रवाई दीवानी	१)
विजली का तावीज	१)	तार के काम की डैमी	१।)
कृष्ण कान्ता आठों भाग	४)	लैटर राइटर	१)

नोट—डांक महसूल कीमत से अलग देना होगा।

मिलने का पता—सीताराम बुकसेलर अलीगढ़ सिटी

नमक सुलैमानी।

हम दावे से कहते हैं कि ऐसा स्वादिष्ट और सर्व रोग विनाशक नमक सुलैमानी आज तक नहीं बना इसके खाने से पेट का कोई रोग कभी उत्पन्न नहीं होता रक्त विकार उदर रोग बदहज़मी, खट्टी डकारों का आना पेट का अफरना दस्त न होना, गले की जलन बादी का दर्द वात गठिया और बवासीर, प्रमेह, नामर्दी हैजा और ताऊन को इसका प्रयोग रामबाण इलाज है, फोड़ा, फुन्सी दरद, खाज कोढ़ खांसी नज़ला, संग्रहणी अतीसार इत्यादि रोगों को नाश करके शुद्ध रक्त और नया वीर्य उत्पन्न करता है बच्चों के दांत निकलने और स्त्रियों के मासिक धर्म बिगड़ने पर इसका प्रयोग बड़ा ही गुणकारी है बर्र और बिच्छू आदि विषैले जानवरों का विष काटने के स्थान पर मलने से तुरन्त विष उतर जाता है पेट की खराब वायु और मल को शुद्ध रखता आंखों में रोशनी और दिमाग़ में ताक़त बढ़ाता है मूल्य बड़ी एक शीशी का १) डा० खर्च ।=)

हमारे यहां की छपी हुई अन्य २ पुस्तकें:—

स्वराज्य गीतावली	-)	स्वराज्य की बंशी	-)
स्वराज्य की लहर	-)	राम सीता भजनावली	=)
स्वराज्य की धूम	-)	स्त्री भजनमाला	-)
स्वराज्य का डंका	-)	हारमोनियम टीचर	।=)
स्वराज्य की निर्भय-तरंग	-)	गऊ पुकार	)॥

मिलने का पता—सीताराम बुकसेलर अलीगढ़ सिटी